E-ISSN: 2707-7020
P-ISSN: 2707-7012
JSSN 2021; 2(2): 23-26
Received: 19-08-2021
Accepted: 21-10-2021

डॉ. अनिल कुमार मिश्र
एसोसिएट प्रोफेसर शारीरिक शिक्षा खेल एवं योग विज्ञान संस्थान डॉ राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. अनिल कुमार मिश्र
एसोसिएट प्रोफेसर शारीरिक शिक्षा खेल एवं योग विज्ञान संस्थान डॉ राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या उत्तर प्रदेश, भारत

सामाजिकरण और राष्ट्रीयकरण में खेलों का योगदान

डॉ. अनिल कुमार मिश्र

सारांश
प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य समाज निर्माण तथा राष्ट्रीय निर्माण में सहायक शारीरिक शिक्षा एवं खेलों के महत्व को स्पष्ट करना है। यह अध्ययन इस बात की समीक्षा करता है कि किस प्रकार शिक्षा व्यवस्था में शारीरिक शिक्षा तथा खेलों के समावेशन ने युवाओं तथा बच्चों को एक स्वस्थ समाज का एक गतिशील हिस्सा बनाने में अपना महत्व पूर्ण योगदान दिया है। शारीरिक शिक्षा के क्षेत्र में नवीन अनुसंधानों ने खेलों के प्रति बढ़ती लोकप्रियता को बढ़ाने के साथ साथ सामाजिक गुणों के विकास को भी प्रभावित किया है।

कूटशब्द: सामाजीकरण, राष्ट्रीयकरण, शारीरिक शिक्षा, खेल

प्रस्तावना
खेलों के योगदान की स्पष्टता को समझने हेतु प्राचीन समय से ही शोधों तथा नवीनतम अवधारणाओं का विकास होता आया है। वर्तमान में विभिन्न देशों द्वारा शारीरिक शिक्षा तथा खेलों के संबंध में बहुतेरे क्रांतिकारी परिवर्तनों को स्थापित किया गया है। शारीरिक शिक्षा वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का एक एहम हिस्सा बन चुकी है। किसी भी राष्ट्र के स्वस्थ विकास को वहाँ के युवाओं तथा बच्चों के स्वस्थ शारीरिक तथा मानसिक विकास के द्योतक के रूप में देखा जाता है। शारीरिक शिक्षा न केवल सामाजिक गुणों का विकास करती है बल्कि बच्चों के भीतर प्रारंभिक स्तर पर ही राष्ट्रीय एकता अथवा राष्ट्रीय भावनाओं को विकसित करने का काम करती है। जैसा की सर्विदित् है कि सामाजिक गुणों का समावेशन बच्चों में जन्म से ही प्रारंभ हो जाता है परंतु विद्यालय स्तर पर इन सामाजिक गुणों को ढाँचा गत स्वरूप प्रदान करने में शारीरिक शिक्षा अपना अहम रोल निभाती है। सामाजीकरण की प्रक्रिया में ऐसे मूल्यों एवम सिद्धांतो को निहित किया जाता है जिनका सीधा संबंध सामाजिक विकास से होता है। जबकि राष्ट्रीय करण के संबंध में खिलाडियों के भीतर राष्ट्रीय भावना का विकास राष्ट्रीय एकी करण की मूल सिद्धांतो को प्रभावित करता है।

शारीरिक शिक्षा एवं मनोरंजन की राष्ट्रीय योजना द्वारा खेलों तथा शारीरिक शिक्षा के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि शारीरिक शिक्षा का उद्देश्य प्रत्येक बच्चे को शारीरिक मानसिक तथा भावनात्मक रूप से सक्षम बनाने में और उसमें ऐसे ही व्यक्तिगत एवं सामाजिक गुण पैदा करने के लिए आवश्यक है जो से दूसरों के साथ मिलकर प्रसनता से रहने और एक अच्छा नागरिक बनने के लिए सहायता करेगी।

अध्ययन उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य भारतीय परिवेश में खेलों के महत्व को स्पष्ट करना है। इसके अंतर्गत उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु खेलों द्वारा उत्पन्न सामाजिक एकीकरण तथा राष्ट्रीयकरण जैसे अति आवश्यक बिंदुओं पर चर्चा की गयी है। इसके अतिरिक्त सामाजीकरण तथा राष्ट्रीयकरण द्वारा खिलाडियों में उत्पन्न कौशलो का अध्ययन भी इसके उद्देश्यों में सम्मिलित है।

खेल और सामाजीकरण

सामाजीकरण से अभिप्राय सामाजिक गुणों के समावेशीकरण से है। बच्चों के संदर्भ में खेलों द्वारा सामाजीकरण का विकास एक आदर्श समाज के विकास के सम्तुल्य समझा गया है। खेलों द्वारा बच्चों में रचनात्मकता उत्पन्न होती है। सामाजिक परिघटनाओ के अनुरूप समाज में अपना स्थान चिंहित करने के उद्देश्य से बच्चों में नेतृत्व रूपी गुणों का विकास अपनी अहम भूमिका निभाता है। खेलों द्वारा सामाजिक गतिविधिए सामाजिक क्रिया शीलताए सहयोगए साहचर्य एवं सामाजिक संबंधो का विकास सुनिश्चित होता है। चूंकि खेलों में समूह की भावना निहित होती है अत खिलाडियों के आपसी संबंधों में भी मधुरता दिखाई देती है। इस प्रकार खेलों तथा सामाजीकरण में धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है।

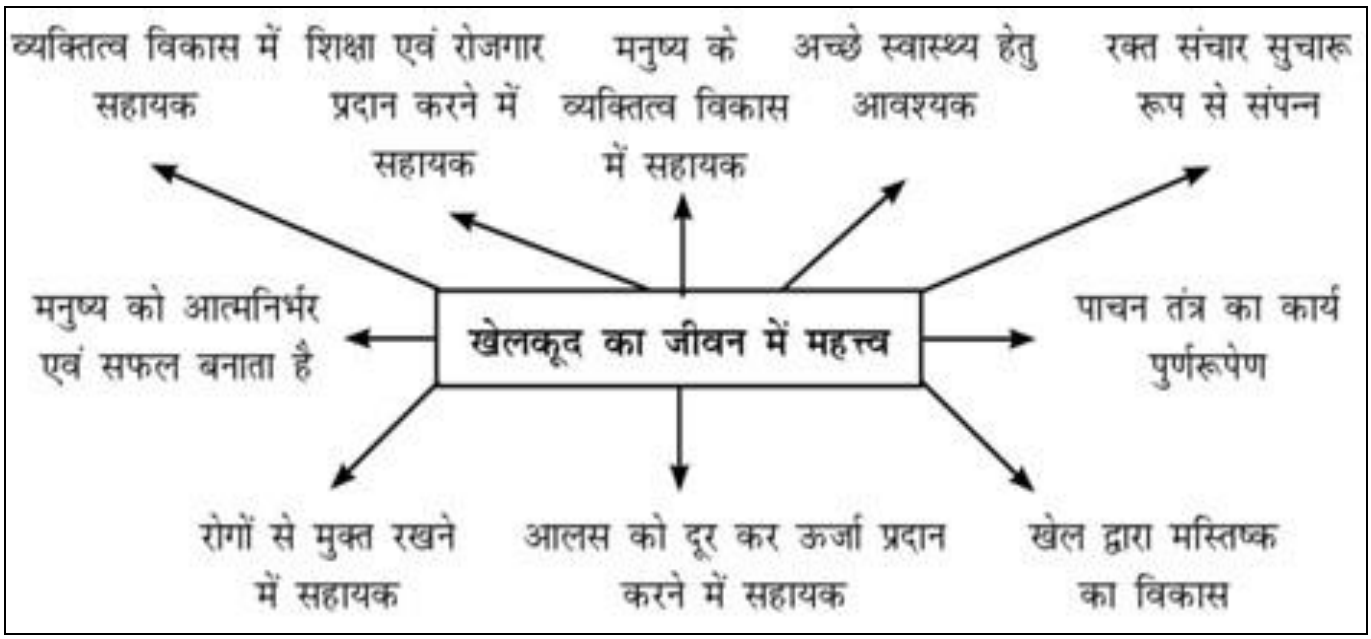

चित्र 1: खेलों का सामाजिक जीवन में महत्व को दर्शाता चित्र

शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा शारीरिक शिक्षा विषय पर बल देते हुए कहा गया है किए ष् शारीरिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक बालक को शारीरिकए मानसिक तथा सवेगात्मक रूप से स्वस्थ बनाना है तथा उनमें व्यक्तिगत व सामाजिक गुणों का भी विकास करना है ताकि वे

प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन जी सके और एक नागरिक बन सके। (सैनी, पाण्डे *et al*. 2016) [2]

खेलो में सामाजीकरण द्वारा उत्पन्न कौशल

1. खेलों तथा शारीरिक क्रियाओं में प्रतिभागी बन ने से एक उत्तम चरित्र का निर्माण होता है। अतरू खिलाड़ी चरित्रवान बनते हैं।
2. खेलों द्वारा खिलाडियों के भीतर अनुशासन जैसे सामाजिक गुण विकसित होते हैं।
3. खेलों के द्वारा ईमानदारीए आत्म नियंत्रण जैसे कौशल का विकास भी खिलाडियों को समाज में बेहतर स्थान दिलाता है।
4. खेल तथा शारीरिक शिक्षा व्यक्तित्व के स्वस्थ विकास हेतु अति आवश्यक होते हैं।
5. खेलों तथा शारीरिक शिक्षा द्वारा ही खिलाडियों में मानसिक परिपक्वता का विकास होता है।

खेल और राष्ट्रीयकरण

खेलों में राष्ट्रीता प्रत्येक राष्ट्र हेतु अत्यंत ही गौरवपूर्ण विषय माना जाता है। जब एक राष्ट्र के खिलाडी तथा एथलीट अपने देश के लिए खेल की प्रतिस्पर्धा में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं।

वास्तव में खेलों द्वारा राष्ट्रवाद उत्पन्न होता है जिसका सीधा संपर्क उस देश की जनता से होता है। राष्ट्रवाद शिक्षा मनौ विज्ञान का एक अहम कारक माना गया है जो मानसिक रूप से खिलाडियों के खेल प्रदर्शन के दौरान भी उत्साह के रूप में विद्यमान रहता है।

खेलों के दौरान राष्ट्रीय भावना के सबसे बेहतरीन उदाहरण ओलंपिक में भार 1936 और जर्मनी के हॉकी फाइनल मैच के दौरान देखने को मिलता है। मेजर ध्यान चंद की लग्नए मेहनत तथा राष्ट्रीय भावना के आधार पर ना केवल मैच में विजय प्राप्त हुई बल्कि जर्मनी के तानाशाह हिटलर को उनके इरादो का लोहा मानना पड़ा।

राष्ट्रीय भावना का एक और सर्वश्रेष्ठ उदाहरण क्रिकेट के इतिहास में देखने को मिलता है जब सचिन तेंदुलकर अपने क्रिकेट कैरियर का प्रथम मैच ही अपनी प्रतिद्वंदी एवम आक्रामक टीम पाकिस्तान के विरुध खेला और उनकी नाक पर गेंद लगने से बुरी तरह घायल होने के बावजूद भी मैदान को नहीं छोड़ा और अंततः मैदान पर डटे रहे।

इसी प्रकार के अनेकों उदाहरण हमारे समक्ष उपलब्ध हैं जो यह प्रदर्शित करते हैं कि खेलों के दौरान खिलाडियों के लिए अपने देश के लिए खेलना तथा जीत दर्ज करना ही राष्ट्र भक्ति है।

सामूहिक खेलों में प्रदर्शन के दौरान विभिन्न जातियों व समूहों के खिलाडियों का भिन्न भिन्न धार्मिक मान्यताओ होने के बावजूद भी एक ही उद्देश्य को आत्मसात् कर एक राष्ट्र एक टीम के लिए प्रतिस्पर्धा करना खेलों की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक मानी जा सकती है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त अध्य्यन के विश्लेषण के पश्चात यह कहा जा सकता है कि खेलों के द्वारा ही एक आदर्श नागरिक को निर्माण किया जा सकता है । खेल ना केवल शारीरिक विकास को ही प्रभावित करते हैं बल्कि खिलाडियों के भीतर जीवनोपयोगी कौशलों का जैसे निर्णय लेने की क्षमताए मानसिक रूप से स्वस्थ मानसिक नियंत्रणए आत्म अनुशासनए सहयोग की भावना आदि का विकास संभव होता है। विकसित राष्ट्रो से तुलना की जाये तो भारत में शारीरिक शिक्षा तथा खेलो के विषय से संबंधित उपलब्धियों के अत्यंत संतोषजनक आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। हमने प्राय यह देखा हैं कि सकल घरेलु उत्पाद के आधार पर भारत से भी पिछड़े कई राष्ट्रो का खेलों में बेहतर योगदान व उपलब्धियां दर्ज हैं क्योंकि वर्तमान में भी भारत मे खेलों तथा खिलाडियों के कल्याण हेतु सरकारों द्वारा सजगता कम ही दिखाई देती

रही है जिसके परिणामस्वरूप हम खेलों के आधार पर आज भी कई राष्ट्रो से पिछड़े हुए हैं।

संदर्भ सूची

1. Kumar R. Impact of Physical Education and Sports in Promoting Social Values among Youth, International Journal of Indian Psychology, 2017, 4(2).
2. Ashwani Saini, Pankaj Pandey. Health and Physical education, convent publication, New Delhi, 2016.
3. BROWN C. Sport, modernity and nation building: The Indonesian National Games of 1951 and 1953. Bijdragen Tot de Taal-, Land- En Volkenkunde, 2008, 164(4)
4. Rosemarijn Hoefte &Wouter Veenendaal. The Challenges of Nation-Building and Nation Branding in Multi-Ethnic Suriname, 2019, 173-190.